



रायगढ़ जिले में जल संरक्षण

भाग्यश्री धुर्वे

इतिहास अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश—

रिसायत कालीन रायगढ़ जल संसाधन से परिपूर्ण था। इसके चारों ओर कुओं, नदी व तालाब हुआ करते थे। लेकिन अत्यंत संसाधनों के दोहन व अनुचित उपयोग से जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। रायगढ़ के राजा महाराजों ने पारम्परिक कुओं, तालाबों व जलाशयों के निर्माण को अपने जीवन में महत्व दिया। बढ़ते हुए शहरीकरण व जनसंख्या के कारण जल का उपयोग बढ़ गया है। शहरीकरण के साथ ही जल स्रोतों में कमी आई है। इसकी वजह से कई पर्यावरणीय समस्याएं पैदा हो गई हैं। इनमें जल आपूर्ति की कमी, पानी के प्रदूषित होने होने और इसके संग्रहण जैसे पहलू प्रमुख हैं। नदियों के किनारे बसे शहर व कस्बों से कई पर्यावरणीय समस्याएं पैदा हो गई हैं। जिले में जल संरक्षण से निपटने के लिये तालाबों का गहरीकरण, साफ सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। साथ छत्तीसगढ़ सरकार कई योजनाएं चला कर नदी, नालों को पुनर्जीवित कर रही है। सरकार प्रत्येक गांवों में तालाब, कुओं के रख रखाव को भी प्रोत्साहित कर रही है। जिसे कई छोटी छोटी नदियों को जोड़ने का कार्य भी किया जा रहा है। साथ ही स्टॉप डेम, रेनीकट, लघु सिंचाई योजना, नलकूप, जल संग्रहण प्रबंधन कार्यक्रम के तहत भी कई ग्रामों में जल संरक्षण के लिये पानी टंकी, पम्प फिटिंग व सोख पीट का निर्माण कराया गया है।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Bhagyashri Dhurve School of Studies in History , Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh, India Email: dhurvebhagyashri@gmail.com	

छत्तीसगढ़ में जल संसाधन के विभिन्न स्रोत विद्यमान हैं। जिनके उपयोग विकास व संरक्षण की अत्यधिक आवश्यकता है।

शब्द कुंजी— जल संसाधन, संरक्षण, पुनर्जीवित।

भूमिका –

रायगढ़ जिला छत्तीसगढ़ की भूतपूर्व रियासतों में से एक है। रायगढ़ का राजवंश चांदा के प्राचीन गोंड राजवंश से संबंध रखता है। रायगढ़ रियासत को संगठित करने वाले मदन सिंह चांदा जिले के एक गाँव बैरागढ़ से आये थे। बाद में वे फुलझर से होते हुए बांगा चले गये जो रायगढ़ रियासत में एक गांव है। किसी अज्ञात कारणवश वे बांगा छोड़कर रायगढ़ आ गये, और फिर वही बस गये।¹ रायगढ़ के राजाओं ने परम्पारिक कुओं, तालाबों व जलाशयों के निर्माण को अपने जीवन में महत्व दिया। उन्होंने जल संरक्षण के लिये पानी को धरती के अंदर भेजकर भावी पीढ़ी के लिए रास्ता सुगम किया। रियासत कालीन रायगढ़ में सिंचाई मुख्य रूप से तालाबों से ही होती थी, रियासत में 1811 तालाब थे। सिंचाई के तालाब अधिकतर 'कटास' हैं जो ढलुवा स्थानों पर बांध बनाकर निर्मित किये गये हैं।²

एक समय था जब जल का खजाना लबालब था लोग कम थे जल अधिक, जल संकट नहीं था। गांवों में कुओं के महत्व को कोई नकार नहीं सकता। देखते ही देखते कुओं का स्थान हैण्ड पंपों ने ले लिया। तालाबों पर भी कब्जा कर इनको पाटकर रहने के लिए घर का निर्माण होने लगा है। प्राकृतिक जल संपदा को दोहन भी अत्यधिक बढ़ गया है। पारंपरिक जल स्रोत कुएं, तालाब, नदियों के कटाव की वजह से सूखने लगे हैं।³

शोध का उद्देश्य –

शोधार्थी का उद्देश्य है कि रायगढ़ जिले में जल संरक्षण की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि—

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसके अंतर्गत सरकारी प्रपत्रों, शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। साथ ही मानचित्र एवं रेखाचित्र की भी सहायता ली गई है।

साहित्य का पुनरावलोकन

1. गुप्त, प्यारेलाल, (1973)⁴ ने अपनी कृति “प्राचीन छत्तीसगढ़” में छत्तीसगढ़ की प्राचीन सभ्यता का वर्णन किया है साथ ही प्राचीन छत्तीसगढ़ की शासन प्रणाली, रियासतें, जमींदारियों का भी उल्लेख किया है।
2. ओझा, डी.डी. (2005)⁵ ने “जल संरक्षण ” में जल के महत्व व उसके विलक्षण तथ्यों को बताया है तथा जल संरक्षण एवं संचयन की आवश्यकता और पारम्परिक पद्धतियों का भी विस्तृत व्याख्या की गई है।
3. शर्मा, सी एल. (2008)⁶ ने “छत्तीसगढ़ की रियासतें” में मध्यप्रांत के छत्तीसगढ़ संभाग के अंतर्गत आने वाली चौदह रियासतों का विस्तृत वर्णन किया है। इन्होंने रियासतों की ऐतिहासिक इतिहास, भौगोलिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति का भी वर्णन है।
4. जैन, अरुण कुमार (2015)⁷ ने अपनी पुस्तक “ जल ही अमृत है” में जल संसाधन, जल संरक्षण, जल संरक्षण का महत्व का वर्णन किया है। साथ ही उन्होंने जल की आवश्यकता व उसके प्रदूषण की स्थिति को उजागर किया है।
5. देवांगन, राजेन्द्र प्रसाद (2016)⁸ ने “जरूरी है जल प्रबंधन” में जल प्रबंधन के लिये वर्तमान व भविष्य में जल की स्थिति, भविष्य के लिये जल बचत में सकारात्मक जल प्रबंधन के बारे में बताया है। उन्होंने पुस्तक के द्वारा जल प्रबंधन व संरक्षण की महत्ती आवश्यकता की जानकारी दी है।

जल संरक्षण की आवश्यकता

जल संकट ने दुनिया की तमाम बड़ी अर्थ व्यवस्थाओं को चिंता में डाल दिया है। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार यदि कृषि, उद्योग तथा घरेलू आदि उपयोगों के लिए जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो तो इस अवस्था को “वाटर स्ट्रेस” कहते हैं।⁹

विश्व के जल संसाधनों का 4 प्रतिशत हिस्सा ही हमारे देश में उपलब्ध है, किंतु यहां की जल व्यवस्था ऐसी है कि उपयुक्त जल प्रणाली के अभाव में इस्तमाल करने योग्य जल का लगभग आधा हिस्सा व्यर्थ चला जाता है।¹⁰ अन्धाधुन्ध शहरीकरण के संगत निकास प्रणाली के बुनियादी ढाँचे विकसित नहीं हुये। शहरी विकास, ग्रामीण विकास, कृषि आदि विभागों की अपनी योजनाओं को समेकित अध्ययन के प्रबंधन की आवश्यकता है।¹¹

बढ़ते शहरीकरण के कारण रायगढ़ जिले में जल संरक्षण की आवश्यकता भी बढ़ रही है। उद्योगों से निकलने वाला जल सीधा नदी, नालों में प्रवाहित किया जा रहा है, जिससे जल दूषित हो रही है। नदियों किनारे बसे गांव का इन दूषित जल का उपयोग करने से स्वास्थ्य में प्रभाव पड़ रहा है। प्राचीन काल में तालाबों, कुओं, जलाशय से परिपूर्ण यह जिला बढ़ती जनसंख्या के कारण अब नष्ट हो रहा है। अतः जल के संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गई है।

रायगढ़ में जल संरक्षण –छत्तीसगढ़ के समाजिक सांस्कृतिक भागों में जल संरक्षण का प्राचीन समय से अत्यधिक महत्व रहा है। छत्तीसगढ़ में वर्षा जल का संरक्षण अधिक किया जाता है। रायगढ़ जिले में पर्याप्त वर्षा होती है। रायगढ़ को बंगाल और बंबई दोनों से मानसून का लाभ प्राप्त होता है और इसलिये यह रिसायत 1900 के अकाल से बच गया था। जलवायु मैदानी क्षेत्रों में पहाड़ी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक गर्म है।¹² छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा सुराजी गांव योजना के माध्यम से गांवों को विकसित और आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने की पहल की जा रही है। छत्तीसगढ़ में जल संरक्षण और संवर्धन के लिये संचालित नरवा (नाला) विकास योजना के जरिये राज्य के नदी नालों एवं जल स्रोतों को पुनर्जीवित किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में निर्मित निर्माणाधीन योजनाएं 2020 के अनुसार 08 वृद्ध 37 मध्यम 2401 लघु सिंचाई योजनाएं तथा 30 नलकूप योजना एवं 734 एनीकट स्टापडेम निर्मित है। जबकि 04 वृहद 01 मध्यम एवं 416 लघु सिंचाई योजनाएं तथा 01 नलकूप योजना एवं 186 एनीकट स्टापडेम निर्माण है।¹³

रायगढ़ जिले में जल संरक्षण के लिये सरकार द्वारा विभिन्न योजनायें तथा नयी वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। जिले के धरमजयगढ़ विकासखण्ड में एकीकृत जलग्रहण प्रबंधन कार्यक्रम के तहत आस्था मूलक कार्य के

अंतर्गत पानी टंकी ,पम्प फिटिंग एवं सोख पीट का निर्माण किया गया है। जल संग्रहण कार्य के अंतर्गत ग्राम डुमरघाट नाला में स्टॉप डेम का निर्माण किया गया है।



स्टॉपडेम

रायगढ़ में महानदी केलो, मांड नदियां हैं तथा केलो यहां की प्रमुख नदी है। महानदी रायगढ़ और सारंगढ़ की प्रकृति सीमा है रायगढ़ का संपूर्ण प्रवाहित जल महानदी में जाकर मिलता है।

उद्योगों व सीवेज का पानी जाकर सीधे नदी में मिलता है जिससे यह नदी दूषित होती जा रही है। साथ ही रख रखाव व सफाई के अभाव में सूख रही है। रायगढ़ जिले में कई जलाशय वरदान स्वरूप मिले हैं। यहां जल संसाधन के विकास की असीम संभावनाएं हैं। लेकिन पर्याप्त संरक्षण नहीं होने से इसके नियोजन एवं प्रबंधन में समस्याएं आ रही हैं। अतः इनके उचित प्रबंधन वैकल्पिक एवं लाभकारी उपयोग को ध्यान में रखते हुए जल संरक्षण, नियोजन एवं प्रबंधन की अत्यंत आवश्यकता है।

गर्मी में जहाँ आम आदमी के लिये पीने के पानी की किल्लत है। वहीं कई जगहों पर प्राकृतिक जल स्रोतों से हजारों लीटर पानी नालियों व नदी में व्यर्थ बह जाता है। जिसका सदुपयोग काफी कम हो पा रहा है। प्राकृतिक जल स्रोत के बहते पानी को बचाने के लिये छत्तीसगढ़ सरकार ने अब नरवा प्रोजेक्ट के तहत इसे संरक्षित करने की पहल की है। अब ग्लोबल इंफॉर्मेशन सिस्टम सर्वे कराकर इन जल स्रोतों से निकलने वाले पानी का सदुपयोग ही होगा। जिले में 13 जगहों पर सर्वे कर इस प्रोजेक्ट के लिये चयनित कर लिया गया है। इस जगहों पर 17 तरीके से जल संरक्षण का काम किया जायेगा। जिसमें परकोलेशन टैंक से लेकर चेकडेम, उपाय शामिल है। नरवा विकास वाली इस योजना में जिले के नदी नालों को रिचार्ज करने

का काम शुरू हुआ है। इसके लिये ग्लोबल इंफॉर्मेशन सिस्टम से नदी नाले में डाउन स्ट्रीम (ढलान वाला इलाका) ढूँढा गया है। कृषि, पीएचई एवं सिंचाई विभाग की रिपोर्ट की आधार पर ऐसी जगह चिन्हित की गई कि जहां बारिश के बाद भी नदी या नाले का पानी का बहाव प्राकृतिक रूप बना रहे और जल संरक्षण के लिये बनाये जाने वाले स्ट्रक्चर में अधिक से अधिक समय तक पानी संग्रहित हो सके। ऐसा इसलिए किया गया ताकि आगे जाकर भूजल स्तर में भी वृद्धि हो और गर्मी के दिनों में भी ऐसे वाटर स्ट्रक्चर (जल संरचना) लोगों के काम आ सके। पायलट प्रोजेक्ट के रूप में रायगढ़ जिले के 09 ब्लॉक में ऐसे कुल 13 स्पॉट चयनित किये गये हैं जहां कि भविष्य का पानी बचाने के लिये काम शुरू किया गया है।

जल संरक्षण के इस काम से जिले में 9 तहसील के 103 गांवों के लोगों को फायदा मिलेगा। 13 जगहों में नदी नालों पर पानी को रोकने के लिये प्रयास किया जाना है, यहां छोटे बड़े मध्यम वाटर स्ट्रक्चर बनाये जायेंगे। जिसमें बारिश का पानी संरक्षित हो सके। इसमें परकोलेशन टैंक से लेकर चेकडेम, कंटूर ट्रेंच, सिल्ट ट्रेप, वेस्ट वियर, स्टॉपडेम एवं नाला बंधान जैसे काम किया जायेगा। ताकि भविष्य के लिये पानी की खेती की जा सके।

जिले में ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति का भी उपयोग जल संरक्षण के लिये किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा इस नयी पद्धति को किसानों को अपनाने के लिये अनुदान भी दिया जा रहा है। इस नई तकनीक से उद्यानिकी फसलों की खेती के लिये सिंचाई के लिये कम पानी की जरूरत होती है। साथ ही भरपूर उत्पादन भी मिलता है। इस सिंचाई पद्धति से एक ओर जहां एक – एक बूंद पानी का उपयोग हो रहा है। वहीं कम पानी में अधिक रकबे में सिंचाई की जा सकती है। इस योजना से राज्य के 95,159 किसानों को लाभ प्राप्त हो रहा है।



स्प्रिंकलर विधि



टपक (ड्रिप) विधि

जल संरक्षण के लिये शासन कई प्रकार से योजना चला रही है लेकिन इन योजना को आज भी अधिकांश लोग नजरअंदाज करते हैं कभी रायगढ़ जिले में तालाबों की अधिकता थी लेकिन वर्तमान में उचित देखभाल के अभाव व लोगों द्वारा कब्जा करने से ये कम होते जा रहे हैं। जल संरक्षण का सबसे आसान सुगम साधन होने के बाद भी इनका अनुचित दोहन किया जा रहा है। जिले कि शहरी क्षेत्र की बात करें तो जिला मुख्यालय रायगढ़ में परिसीमन के तहत 22 तालाब हुआ करते थे, लेकिन तालाबों को पाटते हुये कहीं मकान बना लिया गया तो कहीं कार्यालय बना लिया गया। इसके विपरीत जिले के कई गांवों में तालाबों को संरक्षित कर जल संरक्षण की दिशा में अहम भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान में रायगढ़ जिले में बारिश के करोड़ों लीटर पानी को सहेजने के लिये करीब 200 तालाबों का जीर्णोद्धार किया गया है। गर्मियों में खुदवाये गये ये तालाब बारिश में लबालब हो रहे हैं। जल संरक्षण की दिशा में बारिश के पानी को सहेजने जिले के अलग – अलग तालाबों को साफ सफाई और गहरीकरण का काम किया जा रहा है। वहीं जिले के विभिन्न उद्योगों को सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत अलग-अलग तालाबों को संवारने का जिम्मा दिया गया है।¹⁴

छत्तीसगढ़ में अमृत सरोवर योजना के तहत नये तालाबों को बनाने ,गहरीकरण और सुंदरीकरण का काम किया जा रहा है। भूजल वैज्ञानिक के अनुसार तालाबों में पानी भरे रहने से निस्तारी की समस्या खत्म हो जायेगी । जीव जन्तुओं को पीने के लिये पानी मिलेगा। बारिश के पानी को रिचार्ज करने का एक ही उपाय है कि इस तालाबों के जरिये रोका जाये, अगर एक एकड़ तालाब है और उसमें पानी रहे तो 300 मीटर तक वाटर लेवल को मेनटेन रखता है।



तालाब गहरीकरण

जल संरक्षण का महत्व –

भारत में जल के असमान वितरण के कारण जल संरक्षण आवश्यक है। जल का उपयोग हम दैनिकजीवन में करते हैं अतः जल संरक्षण आवश्यक है। जल संकट से बचने के लिये राज्य व केन्द्र सरकार ने विभिन्न योजनाएं बनायी हैं। केन्द्र ने जल (प्रदूषण एवं नियंत्रण एवं रोकथाम) अधिनियम 1974 जल प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिये बनाया है। इसके माध्यम से विभिन्न बोर्डों का गठन किया गया है। जिनका कार्य केन्द्र सरकार को जल प्रदूषण संबंधी सलाह देना, राज्य बोर्डों के कार्यों का एकीकृत करना, राज्य बोर्डों का जल प्रदूषण जांच और शोध कार्य में सहायता प्रदान करना, जल प्रदूषण संबंधी जानकारी संचार माध्यमों के द्वारा जन साधारण तक पहुँचाना आदि है।

छत्तीसगढ़ में जल संकट से निपटने के लिये वैज्ञानिक तकनीक के जरिये जल को संरक्षित किया जा रहा है। इस तकनीक से अब तक 4.855 नरवा पुनर्जीवित किया जा चुका है। पहाड़ियों से निकलने वाली छोटी- छोटी नदी और जल स्रोत अपने तेज बहाव के साथ दिशाहीन होकर बहने लगती हैं, इसके लिये वैज्ञानिक पद्धति से एक नरवा में करीब एक दर्जन अलग-अलग डेम बनाए जा रहे हैं। पहले डेम से तेज बहाव को नियंत्रित किया जाता है, फिर अलग अलग डेम के जरिये पानी एकत्रित किया जाता है इससे जहां पहले गर्मियों के दिनों में पानी सूख जाता था वहीं अब वर्ष भर जल आसानी से उपलब्ध है।

राज्य में नरवा विकास योजना के द्वारा जल संरक्षण किया जा रहा है इसके लिये प्रदेश भर में वाटर रिचार्ज के गूगल अर्थ स्टूडियो से करीब 30 हजार नरवा का ट्रीटमेंट किया जा रहा है। जबकि इस योजना से अब तक 2 साल में 4 हजार 355 नरवा को पुनर्जीवित किया जा चुका है। 2019 से अब तक 88 लाख 79 हजार 2016 संरचना स्वीकृत हुये हैं और कुल 9 हजार किलोमीटर नरवा पुनर्जीवित किया गया है।

निष्कर्ष –

छत्तीसगढ़ राज्य में भूजल संरक्षण और संवर्धन के लिये संचालित नरवा विकास योजना के जरिये राज्य के नदी नालों और जल स्रोतों को पुनर्जीवित किया जा रहा है। हम जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। जल अत्यंत आवश्यक है, ये

जानते हुए भी बहुत सारे लोग इसको बर्बाद कर देते हैं। जल की विशाल बहुतायत के बावजूद पानी बहुत सीमित है। यह एक गैर नवीनकरणीय संसाधन है। संक्षेप में हमें जल का अनावश्यक उपयोग बंद करके जल संग्रहण व संरक्षण करना चाहिये, ताकि भविष्य में जल संकट से बचा जा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. गुप्त, प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, 1973, पृष्ठ –251।
2. शर्मा, सी.एल., छत्तीसगढ़ की रियासतें, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर, 2008 पृष्ठ– 271।
3. राणा, याचना और राणा, राकेश, बुंदेलखण्ड में जल संरक्षण एवं प्रबंधन, भारती वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका, 25 अंक, जून एवं दिसम्बर 2017, पृष्ठ 58–62।
4. गुप्त, प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, 1973।
5. ओझा, डी.डी., जल संरक्षण, बालाजी प्रकाशन जयपुर, 2005।
6. शर्मा, सी.एल., छत्तीसगढ़ की रियासतें, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर, 2008।
7. जैन, अरुण कुमार, जल की अमृत है, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2015।
8. देवांगन, राजेन्द्र प्रसाद, जरूरी है जल प्रबंधन, श्री प्रकाशन दुर्ग (छ.ग.) 2016।
9. जैन, अरुण कुमार, जल की अमृत है, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2015, पृष्ठ– 163।
10. देवांगन, राजेन्द्र प्रसाद, जरूरी है जल प्रबंधन, श्री प्रकाशन दुर्ग (छ.ग.) 2016 पृष्ठ –93।
11. पूर्वोक्त, पृष्ठ– 94।
12. शर्मा, सी.एल., छत्तीसगढ़ की रियासतें, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर, 2008, पृष्ठ– 262।
13. <https://www.allgeneralknowledge.co.in> 03/11/2023.
14. <https://www.patrika.com/raigarh.news> 03/11/2023.

